शुभकामना

भव का अनुग्रह हो मिटे
भावी कुफल भवभूति हो ।
अनुभव करें भय सकल खल,
अति दनुज दल अभिभूति हो।
वैभव बढ़े सर्वत्र मंगल,
शान्ति की अनुभूति हो ।
संभव गमन हो श्रेय पथ पर,
ज्ञान की उद्भूति हो ।

-शिव कुमार मिश्र-